स्मृति लेख

विलुप्त सरस्वती नदी की जीवनगाथा: प्राचीन भारतीय ग्रंथों की खोज

डॉ. देवेन्द्र सिंह चौहान

प्रस्तावना

विलुप्त सरस्वती नदी प्राचीन भारत की जीवनधारा थी। वैदिक काल में वह सदानीरा महानदी थी, जो हिमालय से अवतरित होकर सागर में समाहित होती थी। प्राचीन ऋषि-महर्षियों को वेदों जैसे अनमोल ग्रंथों की रचना करने के लिए प्रेरित करने वाली सरस्वती, धर्मयुद्ध महाभारत की साक्षी रही थी। उत्तर महाभारत काल में उसमें जलाभाव होने लगा। पौराणिक काल में वह पवित्र सरोवरों का रूप धारण कर लघुरूपधारिणी वन्दनीय नदी बनकर रह गई। कालान्तर में सरस्वती जलशून्य हो अपने मूल स्वरूप को खोकर विस्मृत हो गई।

विलुप्त सरस्वती की जीवनगाथा में अन्तरनिहित है भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के उदय एवं उन्नयन की गाथा। आइये, इसे हम अपने प्राचीन ग्रंथों में ढूंढें। साथ ही इस दृष्टि से कुछ वैज्ञानिक एवं पुरातात्त्विक तथ्यों पर भी विचार करें।

भारतीय ग्रंथों में सरस्वती

भारत के अधिकांश प्राचीन ग्रन्थों में सरस्वती नदी का वर्णन मिलता है।

वेदों में सरस्वती:

ऋग्वेद में सरस्वती की सर्वाधिक जानकारी उपलब्ध है। सरस्वती की स्तुति में 75 मंत्र हैं, जो ऋग्वेद के नौ मण्डलों में समाहित हैं। इन मंत्रों की रचना विभिन्न ऋषियों ने काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप की। उनमें से कुछ मन्त्रों पर यहाँ विचार करें।

एकाचेतत सरस्वती नदीनाम शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुशाय ।। ऋग्वेद 7:65:2)

ऐकमेव चेतन्यमयी पवित्र सरस्वती नदी पर्वतों से अवतरित होकर सागर में समाहित होती है। वह इस भूलोक में राजा नहुष की प्रजा को पौष्टिक तत्त्व दूध एवं घी प्रदान करती है।

अम्बितमें नदीतमें देवीतमें सरस्वती ।

अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ।। ऋग्वेद 2:41:16)

हे सरस्वती ! आप माताओं में श्रेष्ठ माता, नदियों में उत्तम महानदी और देवियों में अग्रगण्य देवी हो। हे माता ! हम सब अज्ञानी हैं। आप हमें ज्ञान प्रदान करें।

ऋग्वेद मन्त्र 2:41:17, 18 में वर्णन मिलता है कि सरस्वती माता से सुखमय जीवन का आश्रय प्राप्त होता है। साथ ही वे अन्न तथा बल प्रदान कर सत्य मार्ग पर चलाने वाली हैं। ऋग्वेद मन्त्र 6:61:2, 8 में सरस्वती की वेग धाराओं को अत्यन्त बलशाली बताया गया है। वे धाराएं उसके किनारों के विशाल शैल पिण्डों को, जिस प्रकार कमल नाल को उखाड़ा जाता है उसी तरह उनको सहजरूप से उखाड़ कर नष्ट कर रही है। उसका प्रवाह अथाह एवं अविरत है, ध्वनि करता हुआ प्रवाहित हो रहा है। ऋग्वेद मन्त्र 6:61:10, 12; 7:36:6 में सरस्वती को सात बहनों वाली और सिन्धु नदी की माता कहा गया है। सरस्वती से स्तुति की गई है कि वह सब नदियों से मिलकर अथाह जलयुक्त होकर प्रवाहित हो और विपुल अन्न एवम् दुग्ध प्रदान करें।

उपर्युक्त मन्त्रों से यह प्रकट होता है कि ऋग्वैदिक काल में सरस्वती सदानीरा महानदी थी, जो हिमालय की हिमाच्छादित शिखाओं से अवतरित होकर सिन्धु सागर तक अविरत प्रवाहित होकर, उसमें समाहित होती थी। पंजाब की सभी नदियों के साथ मिलकर वह आज के पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध प्रदेश व गुजरात क्षेत्र को सिंचित कर शस्य-श्यामला बनाती थी। इस संदर्भ में ऋग्वेद मंत्र 10:75:5 एवं 3:23:4 के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शतुद्री (सतलज), परुशणी (रावी), असिक्नी (चिनाब), वितस्ता (झेलम), आर्जीकीया (व्यास) एवं सिन्धु, पंजाब की ये सारी नदियाँ सरस्वती की सहायक नदियाँ थीं। सरस्वती के साथ दुग्ध, घी एवं अन्न के उल्लेख से यह भी स्पष्ट होता है कि ऋग्वैदिक काल के लोग पशुपालक एवं कृषक थे, जो सरस्वती घाटी में निवास करते थे।

पंच नद्य सरस्वतीमपी यन्ति सस्रोतस ।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे अभवत्सरित् ।। यजुर्वेद 34:11। ।

पाँच सम यशस्वी नदियाँ विशाल सरस्वती नदी में समाहित होती थीं। वह सरस्वती देश में आगे चलकर पाँच प्रमुख धाराओं में विभक्त हो गई। अर्थात् यजुर्वेदिक काल में भी सरस्वती की पाँच प्रमुख सहायक नदियाँ थीं। वे थीं- दृषद्वती, शतुद्री, विपाशा, इरावती एवं चन्द्रभागा- जो सरस्वती में मिलती थी **(भाष्यकार उद्भट)**। उस काल में वह अपना विशाल डेल्टा कच्छ का रन बनाती हुई पाँच धाराओं में विभक्त होकर सिन्धु सागर

से मिलती थी। वे पाँच धाराएं थीं हरिणी, वाजिणी, न्युडक, कपिला तथा सरस्वती **(स्कन्द पुराण)**।

देवा इमम् मधुनां संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचर्कृषु ।

इन्द्र आसित् सिरपतिः शतकृतुः किनाशा आसन् मरुतः सुदानवः।। अथर्ववेद 6:30:1

परमेश्वर! सरस्वती के किनारे पर रहने वाले लोगों को मधुयुक्त जौ प्रदान करते हैं, जहाँ उदार प्रवृत्ति वाले मरुत कृषक हैं और कृषि के देवता इन्द्र है।

इस मन्त्र से और ऋग्वेद मन्त्र 4:57:7, 8 से स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में ही सरस्वती घाटी में कृषि का विकास हुआ था और अथर्ववेद काल तक कृषि उस समय के लोगों के जीवनोपार्जन का प्रमुख व्यवसाय बन चुकी थी।

मनुस्मृति में सरस्वती

सरस्वती दृषद्वत्वोर्देवनघोर्यदन्तरम् ।

तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मवर्त प्रचक्षते । ।3:17 ।।

देवनदी सरस्वती व दृषद्वती के मध्य देवताओं द्वारा निर्मित जो भूप्रदेश है उसे ब्रह्मवर्त कहते हैं। स्पष्टतः ब्रह्मवर्त का निर्माण सरस्वती और दृषद्वती द्वारा संचित मृदा से हुआ होगा। यही स्थल महाभारत काल में कुरुक्षेत्र कहलाया।

ऐसा कहा जाता है कि एक समय इन दोनों नदियों ने प्रलय का विकराल रूप धारण कर पूरे मानव समाज को नष्ट कर दिया। केवल मनु महाराज, महामत्स्य के सहयोग से, हिमालय में शरण लेकर बच पाये। उन्होंने यत्न कर के मानव समाज को पुनः प्रतिष्ठापित किया, जिससे वे मानव जाति के प्रणेता कहलाये।

ब्राह्मण ग्रन्थों एवं महाभारत में सरस्वती

ब्राह्मण ग्रन्थों में सरस्वती नदी के शिथिल होकर सर्पाकार मार्ग से पश्चिम दिशा में बहने का वर्णन मिलता है। ताण्ड्य ब्राह्मण 25:10:11, 12 के मन्त्र सरस्वती नदी के वृद्धावस्था में प्रवेश होने का संकेत करते हैं। इन ग्रन्थों में पहली बार सरस्वती के उद्गम स्थल प्लक्ष प्रस्रवण एवं विनशन, राजस्थान के मरुस्थल का वह स्थल जहाँ सरस्वती विलुप्त हुई, का उल्लेख मिलता है। इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी लगभग 2600 किलोमीटर थी, का संकेत भी है। *चतुश्चत्वारिन् शदाश्वीनानि* (ता.ब्रा. 25:10:16)। इन मन्त्रों से ज्ञात होता है कि सरस्वती का उदय हिमालय से होता था। ब्राह्मण काल में सरस्वती स्वयंभू नदी नहीं रही क्योंकि वह राजस्थान के मरुस्थल में विनशन में आकर सूख चुकी थी। महाभारत में बलरामजी की सरस्वती उत्सर्पिणी प्रदक्षिणा का बड़ा रोचक प्रसंग है। वे अपनी यात्रा

गुजरात में प्रभासपाटन से आरम्भ करते हैं, जहाँ सरस्वती विशाल स्वरूप में सिन्धुसागर से मिलती है। आगे सरस्वती के मार्ग में आने वाले अनेक सरोवर-तड़ाग तीर्थस्थलों में स्नान करते हुए वे विनशन, द्वैतवन, कुरुक्षेत्र आदि पार कर हिमालय में व्लक्षप्रस्तरण पहुँचते हैं। वहाँ बलरामजी सरस्वती की आराधना करते हैं। फिर पास में स्थित जमुना के उद्गम स्थल में अलौकिक स्नान कर प्रसन्न होते हैं। इससे संकेत मिलता है कि सरस्वती और यमुना के उद्गम स्थल पास-पास ही थे। दूसरा विनशन के बाद पश्चिमी राजस्थान एवं आगे के निचले स्थलों में सरस्वती प्राय: लुप्त हो गई थी, परन्तु सरोवरों के रूप में इत्स्तत: पुन: प्रकट होती हुई दिखाई देती थी। महाभारत में वर्णन मिलता है कि निषादों के राज्य में पहुँचकर सरस्वती उनके स्पर्शदोष से बचने के लिए भूमि में प्रवेश कर गई **(महाभारत 3:130:4)**। ये राज्य सिन्धु नदी के पूर्वी तटीय क्षेत्र में थे।

इसी क्षेत्र में विनशन रहा होगा, जहाँ सरस्वती नवविवर्तनिक परिवर्तनों के कारण विलुप्त हुई होगी।

पौराणिक ग्रन्थों में सरस्वती

सरस्वती नदी का वर्णन *वामनपुराण, मार्कण्डेयपुराण, श्रीमद्भागवत् पुराण* आदि अनेक पौराणिक ग्रन्थों में मिलता है। पौराणिक काल में सरस्वती नदी अत्यन्त श्रद्धा से वन्दनीय देवनदी के रूप में जानी जाती थी।

ब्रह्म नद्या सरस्वत्यामाश्रम: पश्चिमे तटे ।
शम्याप्रास इति प्रोक्त ऋषीणां सम्वर्धन् ।।

श्रीमद्भागवत् में सूतजी महाराज कहते हैं, हे ऋषिगण! सरस्वती नदी ब्रह्म नदी कहलाती है क्योंकि उसके तट पर हजारों ऋषिगण ब्रह्मोपासना करते हैं। उसके पश्चिमी तट पर शम्याश्रम नामक प्रसिद्ध आश्रम है, जहाँ ऋषियों का यज्ञ कर्म हेतु समागमन होता है।

यहाँ पौराणिक काल की तीन रोचक घटनाओं को उद्धृत् करना उचित होगा। *ब्रह्मवैवर्तपुराण* में सरस्वती को नारायण की प्रिय पत्नी बताया गया है। नारायण की दूसरी पत्नी गंगा थी। दोनों महिलाओं में अक्सर कलह होता रहता था। इससे दु:खी होकर सरस्वती ने एक बार यह निश्चय किया कि वह अपनी जीवनलीला समाप्त कर दे। नारायण ने सरस्वती से इस विचार को कुछ समय के लिए त्यागने के लिए कहा। इससे सरस्वती एक छोटी-सी नदी बनकर रह गई और उसका सारा यश गंगा को प्राप्त हो गया।

दूसरी घटना *स्कन्दपुराण* की है। सरस्वती प्लक्षप्रस्रवण से प्रकट होकर हिमालय से प्रवाहित हो रही थी। एक पर्वत उसके मार्ग को बलपूर्वक रोककर खड़ा हो गया। वह

कहने लगा कि सरस्वती उससे विवाह करे। सरस्वती ने कहा, ठहरो! मेरे हाथ में अग्नि है उसे सम्भालो, मैं स्नान करके आती हूँ। अग्नि लेते ही पर्वत भस्म हो गया।

तीसरी घटना भी *स्कन्दपुराण* की है। ब्रह्माजी ने सरस्वती से कहा कि वह बड़वानल लेकर पश्चिमी सागर को सौंप कर आये। इस कार्य के लिये सरस्वती ने सोचा कि उसे कोई देख न ले। इसलिये वह अन्त:सलिला के रूप में बहने लगी। मार्ग में जहाँ-जहाँ उसे लगा कि वह असहनीय गर्मी से निष्प्राण हो रही है, वहाँ-वहाँ वह भूतल से ऊपर आकर प्रकट हो गई।

पहली घटना से संकेत मिलता है कि पौराणिक काल में गंगा ने सरस्वती का जल चुरा लिया। दूसरी घटना से ज्ञात होता है कि सरस्वती का मुख्य हिमालय स्थित स्रोत अवरुद्ध हो गया। उसके कारण सरस्वती वर्षा पर आधारित रहने वाली नदी बनकर रह गई। तीसरी घटना से यह संकेत मिलता है कि सरस्वती प्राय: लुप्त हो गई। उसका स्वरूप अन्त:सलिला के रूप में ही रह गया, जो कभी-कभी भूजल स्तर पर प्रकट होने से स्रोतों के रूप में दिखाई देता है।

उपर्युक्त विवरण से यह संकेत मिलता है कि पौराणिक काल में सरस्वती नदी निचले प्रवाह क्षेत्र राजस्थान में पूर्णरूप से लुप्त हो चुकी थी। ऊपरी क्षेत्र में वह सरोवरों के रूप में और वर्षाऋतु में उन सरोवरों को जोड़ने वाली छोटी-सी नदी के रूप में रही होगी। वे सरोवर, जैसा कि ब्राह्मण ग्रन्थों के वर्णन से ज्ञात होता है, सरस्वती के सर्पाकार प्रवाहों के झीलों में विभक्त होने की प्रक्रिया से बने होंगे। उन्हें पौराणिक काल में सर नाम से सम्बोधित किया जाता होगा। कुरुक्षेत्र में स्थित ब्रह्मसर, ज्योतिसर आदि और पश्चिमी राजस्थान में रानीसर, रावतसर, धन्नासर आदि उन्हीं झीलों के अंश रहे होंगे। उसी स्वरूप के कारण पौराणिक काल में सरस्वती सरोवरों वाली नदी कहलाती थी। अर्थात- सरस्वती=सरस+वती=सरोवरों वाली। स्पष्ट है कि उत्तर पौराणिक काल में सरस्वती पूर्णरूप से लुप्त हो चुकी थी। इसलिये पिछले दो हजार वर्षों से भारतीय मानसपटल से वह विस्मृत रही।

आइये, इस विषय में विज्ञान एवं पुरातत्त्व के धरातल पर कुछ विचार करें।

वैज्ञानिक तथ्य

नवीनतम भू-वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर यह माना जाने लगा है कि हिमालय के पश्चिमी गढ़वाल क्षेत्र में स्थित यमुना की प्रमुख सहायक टोंस नदी ही वैदिक काल की, हिमालय से प्रकट होने वाली सरस्वती नदी रही होगी। वह सरस्वती नाम के विशाल हिमनद

प्रदेश में नारा के नाम से जानी जाती है (चित्र-1) ।

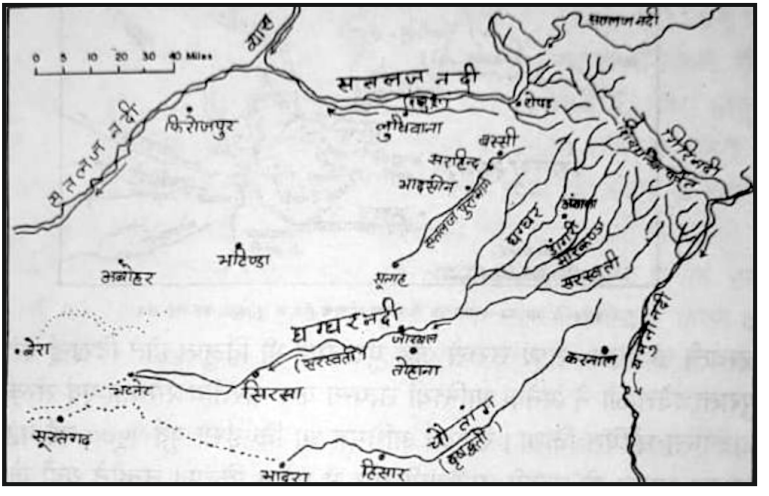

चित्र-1 उत्तर पश्चिमी हिमालय (शिवालिक) का वर्तमान नदी तन्त्र

पुरातात्त्विक तथ्य

पिछले कई वर्षों के पुरातत्त्ववेत्ताओं के प्रयास से पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी राजस्थान, पाकिस्तान के बहावलपुर एवं गुजरात क्षेत्र के सूखे घग्घर - हाकरा - नारा नदी मार्गों पर 1600 से भी अधिक पुरास्थल स्थित दिखाई देते हैं। स्पष्टतः ये पूर्व हड़प्पीय/हड़प्पीय स्थल अधिकांशतः विलुप्त सरस्वती पुरामार्गों पर ही संकेन्द्रित हैं। इससे ज्ञात होता है कि हड़प्पीय सभ्यता का विकास सरस्वती नदी घाटी में ही हुआ था। इस विषय में अधिक सघन कार्य होने से अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि पूर्व हड़प्पीय/हड़प्पीय सभ्यता वैदिक-महाभारतकालिक सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती है। विद्वानों का मत है कि बहुत-से आश्रम, नगर जिनका उल्लेख वेदों और महाभारत में मिलता है, सरस्वती पुरामार्गों पर पाये जाते हैं। महाभारत का युद्ध सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य स्थित कुरुक्षेत्र में हुआ था।

राखीगढ़ी, कालीबंगा, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा, लोथल, तथा सुरकोटड़ा आदि हड़प्पीय नगरों में रुद्र की मूर्तियाँ व यज्ञकुण्ड के अवशेष मिलते हैं, जो उनके वैदिक संस्कार विधि से जीवनयापन करने वाले लोगों के नगर होने का संकेत करते हैं (चित्र-2)। अनेक पुरास्थलों से लिखित शैली मुद्राएं मिली हैं। इन मुद्राओं पर अंकित भाषाओं के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वे तात्कालिक स्थलों, नगरों एवं राजाओं, जैसे

से जल प्राप्त कर सदानीरा नदी बनी रही। उस काल में सरस्वती नदी आज के बाटा-मार्कण्डा नदी मार्ग से आदिबद्री के निकट प्रकट होकर दक्षिण-पश्चिमी दिशा में प्रवाहित होती थी। उससे उत्तर दिशा से आकर सतराना के निकट शतुद्री और उत्तर पूर्व से आकर सूरतगढ़ (हनुमानगढ़, राजस्थान) के पास दृषद्वती नदी मिलती थी। उसके फलस्वरूप वैदिक सरस्वती एक विशाल नदी बनकर, जैसा कि सुदूर संवेदनशील विधा से पुरानदी मार्ग अध्ययन से ज्ञात होता है, आज के पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी राजस्थान व गुजरात को सिंचित कर सिन्धु सागर में समाहित होती थी।

प्रश्न उठता है कि ऐसी विशाल सदानीरा सरस्वती नदी क्यों विलुप्त हुई ? इसके दो कारण प्रस्तुत किये जाते हैं। पहला महाभारत काल में सरस्वती का बाटा-मार्कण्डा मार्ग का, हिमालय के ऊपर उठने के क्रम से शनैः शनैः अवरुद्ध होना। उसके कारण सरस्वती का हिमनद से प्राप्त होने वाला जल उसकी सहायक दृषद्वती को स्थानान्तरित हो गया जिससे वह स्वयं हिमजल से वंचित हो गई। उस भू-वैज्ञानिक परिवर्तन के कारण सरस्वती का मुख्य हिमालय से सम्बन्ध विच्छेद हो गया और वह शिवालिक से निकलने वाली वर्षा पर आधारित नदी हो गई। फिर भी वह अपनी सहयोगिनी दृषद्वती व शतुद्री, जो हिमनद से विपुल जल प्राप्त करने वाली नदियाँ थी, के सहयोग से महती नदी बनी रही। दूसरा, आगे चलकर सरस्वती नदी का अपनी प्रमुख सहयोगिनी दृषद्वती और शतुद्री से पूर्ण विछोह। उत्तर महाभारत एवं पूर्व पौराणिक काल की सन्धि पर जो भू-वैज्ञानिक परिवर्तन हुए, उससे सरस्वती का अधिकांश जल अधिग्रहण करने वाली दृषद्वती पूर्वगामी होकर प्रयाग में जाकर गंगा की सहयोगिनी यमुना बन गई। दूसरी ओर शतुद्री पश्चिमीगामी होकर विपासा को साथ ले सिन्धु की सहचरी बनकर सरस्वती से सदैव के लिए विलग हो गई। कालान्तर में शिवालिक पाद क्षेत्र में शनैः-शनैः वर्षाभाव होने लगा। जिससे सरस्वती निष्प्राण हो पूर्णरूपेण विस्मृत हो गई।

वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के शिवालिक पर्वत क्षेत्र को देखें तो वहाँ से चार छोटी-छोटी नदियाँ दिखाई देती हैं। उनमें से एक का नाम सरसुती (सरस्वती) है। अन्य नदियाँ है मार्कण्डा, डॉगरी व घग्घर। ये नदियाँ खरक के पास मिलकर आज की अधिकांशतः जलशून्य दिखने वाली घग्घर नदी बनाती है। यही सूखी नदी वैदिक काल की, मैदान में बहने वाली, विशाल सरस्वती नदी रही होगी, ऐसा विद्वानों का मत है। यह जलशून्य पुरामार्गों द्वारा चिन्हित होने वाली नदी पश्चिमी राजस्थान में हाकरा तो सिन्ध

श्रीतीर्थ, प्लक्षगृह, सुदास, पुरु, यदु आदि, जिनका वेदों एवं महाभारत में उल्लेख मिलता है, के बारे में बताती हैं। हड़प्पीय नगरों की व्यवस्था तात्कालिक विश्व में बेजोड़ थी। इस दृष्टि से हड़प्पीय लोगों की दो प्रमुख देन कही जा सकती हैं। पहली, उनका उत्कृष्ट नगरीय विकास नियोजन, जिससे मानव सभ्यता का विकास सुलभ हुआ।

दूसरी, उनका अपनी चित्रमय लेखन शैली को परिष्कृत कर वर्णमाला का विकास, जिससे मानव ज्ञान का विकास सहज हो सका।



चित्र-2- भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में पुरास्थल एवं नदी तंत्र

सरस्वती के साथ-साथ उससे जुड़े पुरानगर भी विलुप्त होते दिखाई देते हैं। इस विषय में पाश्चात्य पुरातत्त्ववेत्ताओं ने अनेक भ्रान्तियाँ उत्पन्न कर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रणेताओं को विदेशी आक्रान्ता घोषित किया। उनका अभिमत था कि ईसा पूर्व 1500 वर्ष पहले मध्य एशिया से आर्यों ने आकर भारत के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने यहाँ के मूल लोगों को मारकर उनके नगरों को उध्वस्थ कर दिया और अपने राज्य का विस्तार कर, अधिकांशत: उत्तर भारत में अपना आधिपत्य जमाकर, यहाँ निवास करने लगे। आगे चलकर उन्होंने यहाँ ब्राह्मण प्रदत्त वेद ग्राम्य गीतों की रचना की। इस विषय में अधिकांश भारतीय विद्वानों और बहुत-से विश्व के विद्वानों का मत है कि यह केवल भ्रामक प्रचार ही है। वस्तुत: हड़प्पीय सभ्यता की इति नहीं हुई थी। उस समय के लोग तो वैदिक सरस्वती नदी के सूखने के कारण पश्चिम दिशा में सिन्धु तट के आसपास,

पूर्व दिशा में गंगा-यमुना क्षेत्र और दक्षिण में गुजरात में, जहाँ जीवनयापन के लिए सहज रूप से जल उपलब्ध था, वहाँ पहुँचकर निवास करने लगे। यहाँ पर प्रख्यात पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. बी.बी. लाल को उद्धृत करना उचित होगा- जैसे-जैसे हड़प्पीय नगर अदृश्य होने लगे, वहाँ के लोग अपनी परम्पराएं एवं कार्य करने की शैली लेकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचे, परन्तु अपना भोजन पकाने का तंदूर और खेती करने की विधि और अपनी बैलगाड़ी साथ ले गये। भारत में वर्तमान में महिलाओं के लिये जो आभूषण होते हैं, वे भी उसी काल के प्रारूप में निर्मित हुए लगते हैं। आज भी यहाँ पूर्व के अनुसार, शिव की पूजा होती है। इससे सुस्पष्ट होता है कि हड़प्पीय सभ्यता अकस्मात समाप्त नहीं हुई, परन्तु उसकी भारतीय उपमहाद्वीप में निरन्तरता बनी रही है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहना सार्थक होगा कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का उदय एवं उन्नयन सरस्वती की गोद में हुआ और उनके प्रणेता आर्य भारत के मूलवासी थे। प्राकृतिक कारणों से सरस्वती के विलुप्त होने के साथ शनैः-शनैः उस सभ्यता और संस्कृति का विस्तार शेष भारत में हुआ।

(रि.) प्रोफेसर
भू-विज्ञान विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)